

समिलीपाल बायोस्फीयर रज़िर्व: ओडशा

हाल ही में वन प्रशासन और [सवयं सहायता समूहों \(SHGs\)](#) ने इस वर्ष [समिलीपाल बायोस्फीयर रज़िर्व](#) में आग के प्रबंधन हेतु जागरूकता अभियान शुरू किया है।

- इससे पहले वैज्ञानिकों ने [समिलीपाल टाइगर रज़िर्व \(STR\)](#) में ओडशा के ['बलैक टाइगरस'](#) के रंगों के पीछे के रहस्य को उजागर किया है।

प्रमुख बटु

- **परिचय:**
 - समिलीपाल का नाम '[समिल](#)' ([Simul- सलिक कॉटन](#)) के पेड़ के नाम पर पड़ा है।
 - टाइगर रज़िर्व के लिये इसका चयन आधिकारिक रूप से वर्ष 1956 में किया गया था, जिसको वर्ष 1973 में [प्रोजेक्ट टाइगर \(Project Tiger\)](#) के अंतर्गत लाया गया।
 - भारत सरकार ने जून 1994 में इसे [एक जैवमंडल रज़िर्व \(Biosphere Reserve\)](#) क्षेत्र घोषित किया।
 - यह बायोस्फीयर रज़िर्व वर्ष 2009 से यूनेस्को के [वशिव नेटवर्क ऑफ बायोस्फीयर रज़िर्व \(UNESCO World Network of Biosphere Reserve\)](#) का हिस्सा है।
 - यह समिलीपाल-कुलडीहा-हदगढ़ हाथी रज़िर्व (Similipal-Kuldiha-Hadgarh Elephant Reserve) का हिस्सा है, जिसे [मयूरभंज एलीफेंट रज़िर्व \(Mayurbhanj Elephant Reserve\)](#) के नाम से जाना जाता है।
 - यह जंगल [वनाग्नि](#) से ग्रस्त है। वर्ष 2021 में समिलीपाल में फरवरी के अंत और मार्च की शुरुआत में [वनाग्नि](#) की घटना देखी गई थी।
- **अवस्थिति:**
 - यह ओडशा के मयूरभंज ज़िले के उत्तरी भाग में स्थित है जो भौगोलिक रूप से [पूरवी घाट](#) के पूरवी छोर पर स्थित है।

आवृत्त क्षेत्र:

- यह जैवमंडल 4,374 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है, जिसमें 845 वर्ग किलोमीटर का कोर क्षेत्र (बाघ अभयारण्य), 2,129 वर्ग किलोमीटर का बफर क्षेत्र और 1,400 वर्ग किलोमीटर का संक्रमण क्षेत्र शामिल है।

वनस्पतियाँ:

- समिलीपाल में 1,076 फूलों की प्रजातियाँ और ऑर्कडि की 96 प्रजातियाँ हैं।
- इसमें उष्णकटिबंधीय अर्द्ध-सदाबहार वन, उष्णकटिबंधीय नम पर्णपाती वन, शुष्क पर्णपाती पहाड़ी वन और वशाल घास के मैदान मौजूद हैं।

जनजातियाँ:

- इस बायोस्फीयर रज़िर्व क्षेत्र में दो जनजातियाँ यथा- [इरेंगा खारिया \(Erenga Kharias\)](#) और [मैनकरडियास \(Mankirdias\)](#) निवास करती हैं, जो आज भी पारंपरिक कृषि गतिविधियों (बीज और लकड़ी का संग्रह) के माध्यम से खाद्य संग्रहण करती हैं।

वन्यजीव:

- समिलीपाल बाघों और [हाथियों](#) सहित जंगली जानवरों की एक वसितृत शृंखला का निवास स्थान है, इसके अलावा यहाँ पक्षियों की 304 प्रजातियाँ, उभयचरों की 20 प्रजातियाँ और सरीसृप की 62 प्रजातियाँ निवास करती हैं।

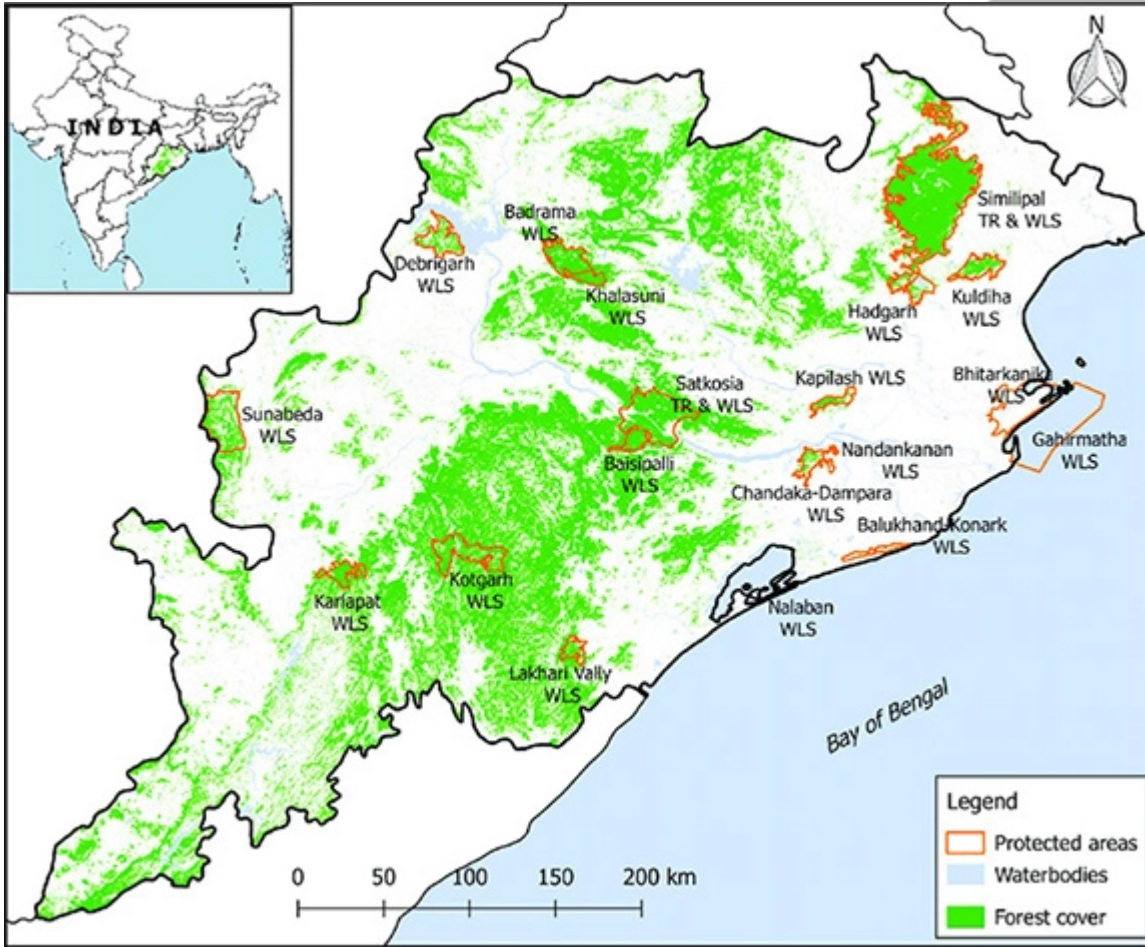
वनाग्नि का कारण और शमन:

- **वनाग्नि:**
 - **प्राकृतिक:** इस क्षेत्र में सूर्य की तपशि और बढ़ता तापमान जैसे प्राकृतिक कारक [वनाग्नि \(Forest Fire\)](#) का कारण बन सकते हैं।

- मानव नरिमति कारणः शकिारयिों द्वारा जंगली जानवरों का शकिार करने के लयि आग का प्रयोग कयिा जाता है जो वनाग्निका कारण हो सकता है ।
- शमन रणनीतयिोंः
 - इन रणनीतयिों में आग की आशंका वाले दनिों का पूरवानुमान, इस कषेतर के समुदायों के सदस्यों के साथ मलिकर आग की घटनाओं को कम करने के लयि कंट्रोल फायर लाइन का नरिमाण, सूखे बायोमास को हटाना, शकिारयिों पर कार्रवाई करना आदि शामिल हैं ।

ओडिशा के अन्य प्रमुख संरक्षति कषेतरः

- भतिरकनिका राष्ट्रीय उदयान
- बदरमा वन्यजीव अभयारण्य
- चलििका (नलबण) वन्यजीव अभयारण्य
- हदगढ़ वन्यजीव अभयारण्य
- बैसीपल्ली वन्यजीव अभयारण्य
- कोटगढ़ वन्यजीव अभयारण्य
- नंदनकानन वन्यजीव अभयारण्य
- लखारी घाटी वन्यजीव अभयारण्य
- गहरिमाथा (समुद्री) वन्यजीव अभयारण्य



स्रोतः इंडयिन एक्सप्रेस

